आदिवासी समाज में प्रकृति, पर्यावरण और गोधन संरक्षण का पर्व : गोवर्धन पूजा

डॉ. गणेश लाल निनामा[1], डॉ. योगिता निनामा[2]
[1]आचार्य-हिन्दी, [2]सहआचार्य - प्राणीशास्त्र,
[1]एस. बी. पी. राजकीय महाविद्यालय, डूंगरपुर (राजस्थान)
उच्च शिक्षा जयपुर, राजस्थान (भारत)

अमूर्त

आदिवासी समाज में गोवर्धन पूजा का विशेष सांस्कृतिक और पर्यावरणीय महत्व है। यह पर्व प्रकृति, पशुधन और मानव के पारस्परिक संबंध को दर्शाता है। गोवर्धन पूजा का पर्व दीपावली के अगले दिन मनाया जाता है और इसे कई स्थानों पर अन्नकूट पर्व या गोवर्धन महोत्सव के रूप में भी जाना जाता है। आदिवासी समुदाय इसे 'खेखरा' कहते हैं। इस दिन गाय-बैल जैसे पशुधन की पूजा करते हैं, क्योंकि ये उनकी आजीविका और कृषि संस्कृति के प्रमुख आधार होते हैं। गोबर से गोवर्धन देवताओं की आकृति बनाकर उस पर फूल, कुमकुम, चावल, हल्दी, और जल अर्पित किया जाता है। यह पर्व भूमि, जल, वनस्पति और पशुधन के प्रति कृतज्ञता का प्रतीक है। इस दिन सामूहिक रूप से ग्राम देवी-देवताओं की आराधना, लोकगीत, नृत्य, और अन्नकूट भोज का आयोजन किया जाता है। यह न केवल धार्मिक विश्वास का प्रतीक है, बल्कि सामाजिक एकता, पर्यावरण संरक्षण और कृषि जीवन के प्रति सम्मान का भी संदेश देता है। संक्षेप में, आदिवासी समाज में गोवर्धन पूजा अध्यात्म, पर्यावरण, संस्कृति और सामुदायिक जीवन का संगम है, जो प्रकृति के साथ संतुलित सह-अस्तित्व की भावना को सशक्त बनाता है।

कीवर्ड: प्रकृति, पशुधन, आराधना, लोकगीत, नृत्य, अन्नकूट भोज, खेखरा ।

परिचय

गोवर्धन पूजा केवल धार्मिक नहीं, बल्कि एक प्राकृतिक आभार एवं कृतज्ञता का उत्सव है। यह पर्व दीपावली के दूसरे दिन मनाया जाता है तथा किवदंती के अनुसार इसे मुख्य रूप से भगवान श्रीकृष्ण द्वारा गोवर्धन पर्वत की पूजा के प्रतीक स्वरूप मनाया जाता है। इस दिन ग्रामीण और आदिवासी समुदाय धरती, पशुधन और प्रकृति के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। गोवर्धन पर्व प्रकृति, पर्वत और गौ-वंश संरक्षण की भारतीय प्राचीन परंपरा का प्रतीक है। इस पर्व में गौ-धन के संवर्धन की प्रेरणा है जो भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पर्यावरण संरक्षण के लिए महत्वपूर्ण है। इसमें भारतीय समाज की वह जीवन दृष्टि समाहित है, जिसमें प्रकृति, पशु, मनुष्य और देवत्व का संतुलन देखने को मिलता है। गोवर्धन पूजा हमें सिखाती है कि ईश्वर अपने भक्तों की रक्षा स्वयं करते हैं। यह पर्व केवल भक्ति नहीं, बल्कि धैर्य और विश्वास की परीक्षा भी है। ईश्वर की सच्ची पूजा प्रकृति की रक्षा और जीवों के प्रति दया से होती है।

पौराणिक महत्व

हिन्दू पुराणों के अनुसार, भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र देव के घमंड को तोड़ने के लिए गोवर्धन पर्वत को अपनी छोटी अंगुली पर उठाया था, ताकि ब्रज वासियों और पशुओं को भारी वर्षा से बचाया जा सके। इस घटना के उपलक्ष्य में गोवर्धन पूजा आरंभ हुई। यह पर्व मनुष्य और प्रकृति के बीच सामंजस्य और सहयोग का प्रतीक है

गोवर्धन पूजा वस्तुतः पर्यावरण संरक्षण का प्राचीन उत्सव है। इस दिन गोवर्धन पर्वत, गौ, वृक्ष, जल, अन्न और भूमि — सभी की सामूहिक पूजा की जाती है।

इन प्रतीकों का अर्थ गहन और वैज्ञानिक है —

- गोवर्धन पर्वत – जलस्रोत, वनों और पारिस्थितिक संतुलन का प्रतीक।
- गौ (गाय) – कृषि, दुग्ध, जैविक खाद और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की आधारशिला।
- अन्नकूट – समृद्धि, साझा भोजन और सामाजिक समरसता का प्रतीक, जो सतत विकास का संदेश देता है।
- गोवर्धन परिक्रमा – पर्वत, वृक्ष, जलाशय और भूमि के प्रति कृतज्ञता की आध्यात्मिक अभिव्यक्ति।

मेरियों

वागड़ प्रदेश में दीपावली अन्य स्थानों के समान ही बड़ी धूम-धाम से मनाई जाती है। इसी दीपावली जैसे पवित्र त्यौहार से जुड़ा हुआ है मेरियों। दीपावली की रात को बाल-ग्वाल मेरियों में दीपक लेकर घर-घर घूमते हैं। मेरियों एक विशेष प्रकार की लौकी जिसे 'तोमड़ा' कहते हैं, से बनाया जाता है, 'तोम' को काट कर उसमें चावल या गेहूँ डालकर उसमें घी या तेल से भरा जलता हुआ दीपक रखते हैं तथा कहीं-कहीं गन्ने को चार भागों में चीर कर उसमें दीपक फँसा कर रखते हैं। इस प्रकार मेरियों को लेकर ही बाल-ग्वाल पूरे गाँव में घूम-घूम कर गौ माता को दीपक दिखाते हैं तथा इसकी जय-जयकार करते हैं, सभी एक साथ बोलते हैं :-

आज दिवाळी, काल दीवाळी, काबरी पेस्यों मेरियों,
मेरियों मांगे तेल, गऊ माता नी जय ।
अणा चाँद-सूरज नी जय, अणी लक्ष्मी माता नी जय।
आज दिवाळी, काल दीवाळी, काबरी पेस्यों मेरियों,
मेरियों मांगे तेल, गऊ माता नी जय ।

इस प्रकार जय-जयकार करता, आरती उतारता यह बाल-ग्वालों का समूह प्रत्येक घर जाता है तथा इन्हें घर मालिक अपनी श्रद्धा से कुछ पैसे, मक्का, गेहूँ तथा कुछ मीठा खाने को भी देते हैं, मिठाई हो तो मिठाई खिलाई जाती है। साथ ही इनके दीए में तेल भी डाला जाता है, ताकि वे आगे तक जा सकें। मेरियों मांगते-मांगते सुबह हो जाती है, जब मेरियों करना खत्म करते हैं, तब ये बालक मेरियों को दीपक सहित गोवर्धन पूजा में रख देते हैं। इसके पश्चात् ये बाल-ग्वाल नहाने जाते हैं। स्नान आदि करने के बाद ये सभी मिलकर अपने द्वारा एकत्रित किया गया अनाज बेच कर मिठाई तथा पटाखे खरीद कर खुशी मनाते हैं।
यह मेरियों दिखाना बड़ा ही मांगलिक माना जाता है क्योंकि गरीब आदिवासियों के लिए लक्ष्मी तथा धन गाय ही होती है और इसी की पूजा की जाती है तथा आरती उतारी जाती है। ताकि साल भर उनके आंगन में खुशियां बनी रहे। इस प्रकार इस परम्परा को सम्पूर्ण वागड़ प्रदेश में बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया जाता है।

पूजा की परंपरा

वागड़ के आदिवासी समाज में गोवर्धन पूजा की परंपरा आदि-अनादि काल से चली आ रही है। इस अवसर पर घर की साफ-सफाई कर गाय के गोबर एवं मिट्टी के मिश्रण से घर एवं आंगन की लिपाई की जाती है। यह लिपाई स्वच्छता एवं पवित्रता की सूचक है।

चित्र -1. गोबर से गोवर्धन देवता का प्रतीकात्मक रूप

चित्र -2. मेहँदी से सजे पशुधन

चित्र – 3 परंपरागत विधि-विधान से गोवर्धन पूजा करता परिवार।

चित्र – 4 परंपरागत विधि-विधान से गोवर्धन पूजा करता परिवार।

गोवर्धन पूजा के अवसर पर नारियल, अगरबत्ती, इत्र, कुमकुम, जल, घी, दूध, अन्नकूट (विभिन्न पकवानों का मिश्रण), पुष्प, गाय के गोबर के कंडे और हवन सामग्री आदि का उपयोग किया जाता है।

गोवर्धन पूजा में 'गोधन' यानी गाय और बैल की पूजा का भी विशेष महत्व है। ग्रामीण भारत की जीवनशैली में गौ धन का स्थान लक्ष्मी की तरह पूज्य माना गया है — वे दूध, घी, गोबर और अन्न उत्पादन के लिए कृषि में सहायक होते हैं। दीपावली के दिन उन्हें नहलाया जाता है और रात्रि में मेहँदी एवं रमजी (रंगों का मिश्रण) से सजाया जाता है (चित्र-2)। गोवर्धन पूजा के दिन गले में घंटी व घुंघरुओं की माला, फूलों व दोवालों (पशुधन की श्रृंगार सामग्री) से श्रृंगारित कर पूजा की जाती है। यह परंपरा हमें अपने पशुधन के प्रति कृतज्ञ होने की सीख देती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में यह पूजा गाय-भैंसों, बैलों और धरती माता की पूजा के रूप में मनाई जाती है। गोबर से गोवर्धन देवता का प्रतीकात्मक रूप बनाया जाता है एक पिता, माता और उनके बीच एक पुरुष शिशु (चित्र-1)। ये रूपांकन दर्शाते हैं कि कैसे महिलाएँ देवताओं और परिदृश्यों की पौराणिक छवियों को पारिवारिक समृद्धि और प्रजनन क्षमता की परिचित छवियों में रूपांतरित करती हैं। (जैसा कि चित्र-1 में देखा जा सकता है), जिसमें वृक्षों, पौधों, फूलों और अनाज के दानों से सजावट की जाती है। पूजा में नारियल, अगरबत्ती, इत्र, कुमकुम, जल, घी, दूध, अन्नकूट (विभिन्न पकवानों का मिश्रण), पुष्प और दीप अर्पित किए जाते हैं।

चित्र – 5 श्रृंगारित पशुधन

चित्र – 6 श्रृंगारित पशुधन

पारंपरिक रीति-रिवाजों के अनुसार उनकी पूजा के बाद में गायों के साथ ग्वालों द्वारा पटाखे आदि छोड़कर खेल खेला जाता है। इसके बाद उन्हें गौशाला से बाहर छोड़ा जाता है, जो गोबर के बने गोवर्धन देवता के ऊपर से होते हुए बाहर निकलती है। बरसों से चली आ रही इस परंपरा में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रहती है।

पर्यावरणीय दृष्टिकोण

गोवर्धन पूजा पर्यावरण संरक्षण की पारंपरिक अवधारणा को भी दर्शाती है। इसमें मिट्टी, गोबर, जल और वनस्पतियों का उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान और स्थायित्व का संदेश देता है। श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पूजा के माध्यम से यह सिखाया कि जो हमें जीवन देता है — जैसे जल, अन्न और पशु — वही असली पूजनीय हैं। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है और उसकी रक्षा करना भी एक प्रकार की पूजा है। गोबर से बने आकृतियाँ जैविक पदार्थों के पुनर्चक्रण का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में भी सहायक होती हैं। गोवर्धन पूजा का पर्व प्रकृति और प्राणियों के बीच समन्वय और संरक्षण से जुड़ा हुआ है। इस दिन गोबर से गोवर्धन देवताओं का प्रतीक बनाकर उनकी पूजा की जाती है। पर्वत का प्राकृतिक संतुलन में महत्वपूर्ण योगदान है। पर्वत जल संरक्षण, संवर्धन और ऋतुओं के संतुलन का समन्वय करते हैं। इससे नदी, तालाब तथा अन्य जलस्रोत सुरक्षित रहते हैं। गोवर्धन पूजन में पर्यावरण को सुरक्षित रखने का संकल्प भी है। पंचतत्वों — पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश — के संतुलन से ही जीवन चक्र संचालित होता है, यही संदेश गोवर्धन पूजा हमें देती है। हमारा प्रयास है कि इस पर्व के माध्यम से प्रकृति और पशु धन का महत्व नई पीढ़ी तक पहुंचे। प्रकृति के प्रति श्रद्धा का पर्व वैज्ञानिक दृष्टिकोण से, पर्यावरण-केंद्रित सोच को बढ़ावा देता है, जो आज के समय में जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक संकटों के समाधान के लिए महत्वपूर्ण है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

गोवर्धन पूजा का यह पर्व आदिवासी समाज में सामूहिकता, सहयोग और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है। ग्रामीण समाज में यह अवसर लोगों को एकत्रित करता है और कृषि-आधारित जीवन की महत्ता को पुनः स्मरण कराता है। पशुओं की पूजा उनके श्रम और आजीविका में योगदान के प्रति सम्मान का प्रतीक है। यह पर्व हमें संसाधनों का महत्व समझाता है। जब हम धरती, जल और अन्न का सम्मान करते हैं, तब ही जीवन संतुलित और समृद्ध बनता है। गोवर्धन पूजा इस संवेदनशीलता की एक सुंदर अभिव्यक्ति है।

निष्कर्ष

आदववासी समाज में 'गोवर्धन पूजा' गौ-धन के प्रति प्रेम और श्रृद्धा के प्रकटीकरण का पर्व है। कृषक एवं ग्रामीण जीवन में गौ-धन जीवन का आधार हैं, और इनकी पूजा हमारे समाज की आध्यात्मिकता एवं सांस्कृतिक चेतना के साकार रूप को दर्शाती है। गोवर्धन पूजा केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि पर्यावरण संरक्षण, कृषि सम्मान और सामाजिक एकता का उत्सव है। यह पर्व हमें प्रकृति के प्रति आभार एवं कृतज्ञता व्यक्त करने और सतत विकास की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। गोवर्धन पूजा का वैज्ञानिक दृष्टिकोण इसके पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता और स्वस्थ जीवन के लिए नई फसल का आहार की प्रथाओं में निहित है, जो सदियों से भारतीय संस्कृति का हिस्सा रहे हैं।

संदर्भ

- **अवधेश झा** (2025). गोवर्धन पूजा : वैदिक एवं प्राकृतिक रूप से महत्वपूर्ण पर्व।
- **विष्णु दत्त** (2025). गोवर्धन पूजा मुख्य रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व का त्योहार है, भारत पोस्ट।
- **कैट्रियन नोटर्मन्स** (2019). गाय के गोबर की प्रार्थना: ग्रामीण राजस्थान (भारत) में उपजाऊ वातावरण गढ़ती महिलाएं, 10(2),71; https://doi.org/10.3390/rel10020071
- **यादव, डॉ. मोहन** (2025). गोवर्धन पर्वः प्रकृति से सह-अस्तित्व और समग्र विकास का उत्सव. मध्य प्रदेश: मुख्यमंत्री कार्यालय, राज्य सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग।
- **राजस्थान पत्रिका** (2 Nov. 2025) "प्रकृति पूजा और संरक्षण का पर्व है गोवर्धन पूजा: सीएम" — समाचार लेख, शुभ दीपोत्सव विशेषांक